P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत अमेरिका संबंध : उभरते आयाम व चुनौतियां

नमोनारायण मीना
शोधार्थी,
राजनीति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत और अमेरिका दुनिया में लोकतांत्रिक मूल्यों, स्वतंत्रता और मानवाधिकार को बढ़ावा देने वाले प्राकृतिक तौर पर साझेदार देश है। दोनों देश विश्व के दो बड़े लोकतंत्र है। इनमें सहयोग व विरोध होना पाया गया है। दोनों देशों के संबंधों की राजनैतिक एवं रणनैतिक समझ को मुख्य रूप से आर्थिक हितों के टकराव और विरोध की नजर से देखा गया है। 21वीं सदी में भारत और अमेरिका संबंध विश्व पटल पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। दोनों ही परमाणु सम्पन्न राष्ट्र है अमेरिका एक विश्व शक्ति है वहीं दूसरी ओर भारत अभी उदीयमान शक्ति है। दोनों राष्ट्र आतंकवाद से प्रभावित हैं तथा इसके बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु वचनबद्ध हैं।

भारत अमेरिका संबंधों का भविष्य उज्ज्वल रहने के आसार हैं क्योंकि वर्तमान समय में दोनों के मध्य अभूतपूर्व एवं प्रभावी समझौते हो रहे हैं।

मुख्य शब्द : भारत अमेरिका संबंध, लोकतांत्रिक मूल्य।

प्रस्तावना

भारत एवं अमेरिका जो कि विश्व के दो बड़े लोकतंत्र हैं, इनमें अभी तक सहयोग के बजाय विरोध अधिक पाया गया है। दोनों देशों के सम्बन्ध ऐसे दो राष्ट्रों के मध्य सम्बन्धों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें एक क्षेत्रीय शक्ति है और एक वैश्विक शक्ति है। दोनों में कुछ समानतायें एवं भिन्नतायें हैं। समानता के रूप में यह कहा जा सकता है कि दोनों ही जनतांत्रिक देश हैं जिनमें बहुलवादी समाज है तथा औपनिवेशिक शक्तियों से स्वतंत्रता प्राप्त की है, जिनमें अमेरिका 1776 में आजाद हो गया तथा भारत 1947 में।

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद संसार में दो महाशक्तियों ने शीत युद्ध को जन्म दिया और विश्व को दो शक्ति गुटों में विभाजित कर दिया उसी समय भारत ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्र होकर नवोदित राष्ट्र के रूप में उभरकर क्षितिज पर प्रकाशमान हुआ। भारत ने पण्डित जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में शक्ति गुटों की राजनीति से पृथक रहकर गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने का निर्णय लिया। सामाजिक स्तर पर देखा जाये तो भारत और अमेरिका दोनों ही बहुलवादी समाज है। दोनों ही देशों में जनता को धर्म एवं अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता है। अभिव्यक्ति और प्रेम की स्वतंत्रता दोनों गणराज्यों का आधार स्तम्भ है।[1]

दोनों राष्ट्र दो विशाल लोकतांत्रिक देश है। यह तर्क दिया जाता है कि भारत जो सबसे बड़ा लोकतंत्र तथा अमेरिका जो सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र है, उनको स्वभाविक मित्र होना चाहिए था परन्तु आज भी उतनी ही भ्रमित स्थिति बनी हुयी है, जितनी की शीत युद्ध काल के समय थी।[2]

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध विषय ''भारत अमेरिका संबंध उभरते आयाम एवं चुनौतियां'' का चयन की आवश्यकता भारत का अमेरिका के साथ सम्बन्धों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण कर, भारत–अमेरिका के सम्बन्धों में आए उतार–चढ़ाव का अध्ययन करना तथा 21वीं सदी में वैश्विकमंच पर भारत–अमेरिका संबंधों का अध्ययन तथा बदलते परिदृश्य में पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन तथा दोनों के संबंधों में वर्तमान में आने वाली नवीन चुनौतियों व आयामों का विश्लेषण करना है तथा शोध का महत्व भारत–अमेरिका संबंधों को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण कर उनके समाधान की दिशा में प्रयास करना प्रमुख महत्वपूर्ण घटक है।

साहित्यावलोकन

रानी, डॉ. मन्जू – नई विश्व व्यवस्था में भारत–अमेरिका सम्बंध, विश्व ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली (2014) प्रस्तुत पुस्तक में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत और अमेरिका बहुत महत्वपूर्ण एवं लोकतांकि देश है। सामरिक व शक्ति के

सन्दर्भ में दोनों की स्थिति अलग–अलग है। इसके बावजूद दोनों के ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक एवं राजनीतक समानताएँ एवं असमानताएँ पाई जाती है। किसी भी देश के व्यापक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए उस देश के अतीत और वर्तमान सम्बन्धों का ज्ञान होना आवश्यक है।

डॉ. अरूण कुमार–दीक्षित, ''इन्डो यू.एस. रिलेशन्स'', सत्यम पब्लिशिंग हाउस, न्यू देहली (2012) प्रस्तुत पुस्तक भारत अमेरिका संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर एक सार्थक विवेचना है। दिन प्रतिदिन विश्व व्यवस्था में हो रहे बदलावों ने भारत–अमेरिका सम्बन्धों को प्रभावित किया है। वर्तमान में दोनों के मध्य विवाद की वजह दोनों देशों की अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका व क्षमता का सही आंकलन नहीं होना है। सही आकलन होने पर दोनों ही देशों के सम्बन्धों में सुधार होगा।

भारत अमेरिका संबंध : उभरते आयाम व चुनौतियाँ

दुनिया के दो महानतम लोकतंत्रों के नेताओं ने दुनियाभर में स्थिरता, लोकतंत्र, विधि, शासन, मानव स्वतंत्रता, समृद्धि और शांति को बढ़ावा देने का वादा किया था। भारत–अमेरिका के मध्य संबंध बहुत ही व्यापक एवं विस्तृत है जिनका अध्ययन हम निम्न आयामों के अन्तर्गत संक्षिप्त रूप से कर सकते हैं।

आर्थिक आयाम

व्यापार आर्थिक संबंधों को संचालित एवं संवर्द्धित करने का प्राचीन साधन है। व्यापार द्वारा केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों में प्रगाढता ही नहीं आती है बल्कि राष्ट्रीय आर्थिक विकास में भी संवृद्धि होती है। 1991 में सोवियत संघ के पतन तथा वैश्वीकरण, उदारीकरण की नीति से भारत–अमेरिका संबंधों का आधार ही आर्थिक हो गया। 2011 की अवधि में सेवाओं का कुल व्यापार 54.42 बिलियन अमेरिकी डॉलर का था। आर्थिक एवं व्यापारिक मुद्दों पर द्विपक्षीय संलिप्ता को सशक्त बनाने के लिए अनेक संवाद यात्राएं की है।[3]

आर्थिक विकास के संबंध में 2001 से दोनों तरफ व्यापार पांच गुना बढ़कर लगभग 100 बिलियन डॉलर हो गया है। राष्ट्रपति ओबाम व प्रधानमंत्री मोदी ने व्यापार को पांच गुना बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्यवाहियों में सुगमता प्रदान करने की कोशिश की। दोंनों नेताओं ने स्वीकार किया कि अमेरिका और भारत के व्यवसायियों को संतोषनीय, समावेशी तथा रोजगारोन्मुख विकास एवं प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

ऊर्जा क्षेत्र में व्यापार और निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए मई 2005 में अमेरिका–भारत ऊर्जा वार्ता प्रारम्भ की गयी थी। ऊर्जा वार्ता के अन्तर्गत तेल व गैस, कोयला, बिजली एवं ऊर्जा दक्षता, नयी प्रौद्योगिकियों एवं नवीकरणीय ऊर्जा, असैन्य परमाणु सहयोग तथा संधारणीय विकास पर छः कार्यकारी समूह विद्यमान है।[4]

राजनीतिक एवं रणनीतिक आयाम

हिंद प्रशांत क्षेत्र दुनिया का विशालतम तथा सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था और जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यह भौगोलिक एवं प्राकृतिक रूप से संसाधनों से समृद्ध होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षण का केन्द्र बन रहा है। अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीतिकार मानते है, कि भारत हिंद प्रशांत क्षेत्र में और उससे भी आगे एक प्रमुख शक्ति है। भारत और अमेरिका इस क्षेत्र को स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में स्वीकार कर इसकी सार्वभैमिकता व अखण्डता पर बल दे रहे। भारत अमेरिका के मध्य टू प्लस टू वार्ता (डायलांग) हो रही तो दूसरी ओर एच–1 बी वीजा विवाद भी दोनों के संबंधों का प्रभावित कर रहा है। 2015 में भारत और अमेरिका के बीच हॉटलाइन सेवा स्थापित की गयी है। चीन, रूस और ब्रिटेन के बाद भारत एक मात्र देश है, जिसके साथ अमेरिकी हॉटलाइन है।[5]

भारत– अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता की रूपरेखा तत्कालिन प्रधानमंत्री मनमोहन व अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने तैयार की तथा 10 अक्टूबर, 2008 को इस पर हस्ताक्षर हो गये जो कि भारत के लिए मील का पत्थर साबित हुआ तथा अंतर्राष्ट्रीय आंतकवाद के खिलाफ सामूहिक लड़ाई और आंतरिक सुरक्षा में दोनों देश आपस में कटिबद्ध है तथा 9/11 के अमेरिकी हमले और 26/11 के मुबई हमले के बाद दोनों देश आंतकवादी विरोध के लिए सहमत हो गये है। वर्तमान में प्रधानमंत्री मोदी ओर अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा ने आंतकवाद पर 'शून्य सहिष्णुता' की बात दोहराई है। भारत–अमेरिका अफगानिस्तान में भी आंतकवाद से निपटने के लिए बेहतर सहयोग कर रहे है। अमेरिका, पाकिस्तान के आतंकी समूहों के साथ संबंधों पर भारत से खुफिया जानकारी साझा करेगा। लेकिन इस बात को समझना चहिए कि अमेरिका को पाकिस्तान, भारत से ज्यादा प्रिय है इसलिए अमेरिका पाकिस्तान के खिलाफ कठोर कदम उठाएगा, इस बारे में संदेह है।[6]

भारत अमेरिका संबंधों के महत्वपूर्ण रणनीतिक घटक

1. अफगानिस्तान, उत्तरी कोरिया, मध्य–पूर्व, पाकिस्तान, भारत–प्रशान्त क्षेत्र में स्थिति।
2. निर्यात नियन्त्रण समझौते और यू.एन. सुरक्षा परिषद में भारत की सदस्यता।
3. साइबर क्षेत्र, मालादार नौसैनिक अभ्यास,
4. एक प्रमुख रक्षा सहयोगी के रूप में भारत की स्थिति की पुनः पुष्टि

उभरते सांस्कृतिक आयाम

भारत और अमेरिका के बीच सांस्कृतिक सहयोग के विभिन्न स्त्रोत है भारत द्वारा विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानें के स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रमों पर केन्द्रित होने के अतिरिक्त दोनों देशों में निजी विश्वद्यालय स्थापित है, जो भारतीय संस्कृति व कला की शिक्षा प्रदान करते है। भारत का राजदूतावास और सांस्कृतिक संगठन भारतीय एवं अमेरिकी समुदायों के सहयोग से उनकी हर संभव मांगों को पूरा करते है। इन गतिविधियों का एक संगठित समूह है। जिसमें– रींडिग इण्डिया सीरीज, परमॉर्निंग इण्डिया सीरीज, बीहोल्डिंग इण्डिया सीरीज, अण्डरस्टैण्डिग इण्डिया सीरीज, यंग इण्डिया सीरीज सम्मिलित है।

सामाजिक क्षेत्र में उभरते आयाम

भारत अमेरिका के लिए दवाओं को निर्यात करने के मामले में दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश हैं। यूएसएफडीए इन जेनेरिक दवाओं की सुरक्षा, गुणवता और

अमरिकी उपभोक्ताओं तक प्रभावी रूप से पहुँचाता है और भारतीय उद्योग और नियामकों के साथ मिलकर काम करता है। 2010 में अमेरिका–भारत स्वास्थ्य पहल में गैर–संचरी रोग, संक्रामक रोगों के क्षेत्र में काम करने, सुदृढ़ढीकरण स्वास्थ्य प्रणाली और मातृ एवं बाल स्वास्थ्य के कार्य पर कार्य कर रहे थे । अमेरिका में अध्ययन करने वाले दूसरे स्थान पर सर्वाधिक भारत के छात्र है।

संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत ने नवम्बर 2017 में वैश्विक विकास के लिए त्रिपक्षीय सहयोग पर मार्गदशी सिद्धान्त के एक मसौदे पर हस्ताक्षर किये। यह एशिया और अफ्रीका में विकास के समाधान में अधिक से अधिक सहयोग को बढ़ावा देने और एशिया में कनेक्टिविटी को मजबूत बनाने में एक रूपरेखा प्रदान करता है।[7]

भारत–अमरिका संबंधों के वैश्विक आयाम

वैश्विक अप्रसार तथा निर्यात में अंतरण व्यवस्था के सुदृढीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में राष्ट्रपति ओबामा तथा मोदी ने परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह, मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था, वाशेनार करार तथा आस्ट्रेलिया समूह में चरणबद्ध ढंग से भारत के शामिल होने की दिशा में काम करना जारी रखने की प्रतिबद्वता प्रकट की।

परमाणु सुरक्षा शिखर बैठक की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार के रूप में अमेरिका एवं भारत में आंतकियों द्वारा परमाणु हथियार या संबद्ध सामग्रियां प्राप्त करने संबंधी जोखिमों को कम करने की दिशा में हुई प्रगति का स्वागत किया है।

भारत व अमेरिका के नये नेता साथ काम करने के पक्ष में हैं ताकि दोनों देशों के बीच संबंधों में आर्थिक विकास अहम स्थान ले तथा वांशिंगटन, बहु–ध्रुवीय परस्पर निर्भर वैश्विक मंच पर एक सक्रिय नेतृत्व भूमिका धारण करते हुए नई दिल्ली के साथ प्रतिबद्ध रहे।[8]

वर्तमान परिदृश्य में भारत–अमेरिका सम्बन्धों के सकारात्मक एवं सहयोगात्मक रूप के बदलते आयाम

1. अमेरिका व भारत के बीच प्रतिरक्षा समझौते होने से दोनों देशों के रक्षा व सैन्य सहयोग में वृद्धि हुई है।
2. प्रतिबन्धों के समापन से दोहरे प्रयोग वाली तकनीकों के हस्तान्तरण का रास्ता खुला है।
3. आंतकवाद के विरूद्ध सहयोग बढाने के व्यापक पहुलओं पर विचार–विमर्श से भारत–अमेरिका सामरिक सहयोग को बल प्राप्त हुआ है।
4. भारत–अमेरिका संबंध असैन्य परमाणु सहयोग संधि करके विश्वास के पात्र हुए है।
5. अमेरिका द्वारा आर्थिक प्रतिबंध हटाए जाने से प्रौद्योगिकी व्यापारिक व पूंजी निवेश के क्षेत्र में द्विपक्षीय समझौते बढ़ने के लिए उचित वातावरण का निर्माण हुआ है।
6. कश्मीर समस्या पर अमेरिका का मध्यस्था की भूमिका निभाने से मना करना सकारात्मक सुधार के संकेत है।
7. भारत और अमेरिका हिन्द महासागर एवं भारत–प्रशांत क्षेत्र में चीन के तेजी से बढ़ते प्रभाव और उपस्थिति से निपटने के लिए एकमत है।

भारत अमेरिका संबंध : चुनौतियॉ

1. भारत अमेरिका बौद्विक सम्पदा अधिकार द्वन्दः दोनों राष्ट्रों के संबंधों में बौद्धिक सम्पदा संरक्षण एक प्रमुख मुद्दा है।
2. एच–1 बी पेशेवर वीजा में कटौती तथा एच–4 वीजा को रद्द करने के प्रयास से दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ रहा है।
3. एच–बी वीजा की वार्षिक सीमा 85,000 : भारत इस संख्या में वृद्धि चाहता है। यहां तक कि अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भी इस सीमा को बढ़ाने का आग्रह किया है।[9]
4. व्यापार एवं संरक्षणवाद के मुद्दों पर दोनों देशों को विश्व व्यापार संगठन में ले जाना दोनो–देशों के मध्य विवाद का विषय है।
5. पाकिस्तान की पर्याप्त अमेरिकी सैन्य व आर्थिक सहायता से भारत–अमेरिका संबंधों में गिरावट आई है।
6. नये अमेरिकी कानून तथा रूस व ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध से दोनों देशों के संबंधों में बड़ी चुनौती पेश कर रहे है। रूस के साथ भारत के 70 वर्ष पुराने गहरे संबंध है, तो ईरान में भारत चाहबार बंदरगाह का निर्माण कर रहा है।
7. जलवायु परिवर्तन पर दोनों के मध्य मतभेद है।
8. अमेरिका ने अपनी विदेश नीति में नवीन उपनिवेशवाद को जन्म दिया है। भारत ने अमेरिका की इस नीति का विरोध किया है।
9. निशस्त्रीकरण को लेकर भी भारत और अमेरिका के मध्य मतभेद है। भारत अमेरिका की सम्पूर्ण निशस्त्रीकरण की नीति का इस आधार पर विरोध करता है कि सर्वप्रथम अमेरिका इसका पालन करें।
10. सी.टी.बी.टी. पर भारत व अमेरिका के मध्य वैचारिक मतभेद है।
11. अमेरिका ने सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र की स्थापना के नाम पर हस्तक्षेप किया है। जो कि किसी भी सम्प्रभुता सम्पन्न देश के प्राथमिक हितों पर किया गया कुठाराघात है।

निष्कर्ष

सच कहा जाय तो बहुत हद तक ऐसा लगता है कि रणनीतिक, राजनीतिक, सुरक्षा, प्रतिरक्षा, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक लिहाज से भारत और अमेरिका के बीच संबंध वर्तमान परिदृश्य में नयी बुलन्दियों तक पहुंचेगें। 21वीं सदी में भारतीय विदेश नीति की व्यापक रूपरेखा अमेरिका के प्रति एक नजरिया विकसित कर रही है। इससे भारत की सैन्य क्षमता में वृद्धि हो रही है, जो उसे सीमा पार से परे भी चीनी मुखरता को कुंद करने के लिए भी सक्षम बनाती है। दोनों देशों ने उपलब्धियों की एक लंबी लिस्ट सामने रखी है।

अमेरिका ने जब पिछले दशक में भारत के सामने रणनीतिक साझेदारके संबंध बनाने का प्रस्ताव रखा था तो बड़ी जिम्मेदारी लेने से पहले भारत ने खुद का

कदम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बनाया। इससे साबित होता है कि भारत में सैन्य, आर्थिक और अन्य तमाम मुद्दों को लेकर एक नया आत्मविश्वास जागा है। यही कारण है कि आज कोई भी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बिना भारत की भागीदारी के किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकता। विश्व व्यापार संगठन में सुधार की बात हो या जलवायु परिवर्तन समझौता या दुनिया को आर्थिक मंदी से बाहर निकालने का मुद्दा हो, हर जगह भारत की आवाज सुनी जा रही हैं ।

भारत अमेरिका संबंध : सुझाव एवं सम्भावनाएं

1. भारत अमेरिका के मध्य रक्षा व रणनीतिक संबंध वर्तमान परिदृश्य में अधिक सशक्त होकर उभरे हैं अतः दोनों ही देशों को यह प्रयास करना चाहिए कि आने वाले युग में ये संबंध नवीन ऊँचाइयों को प्राप्त करें।
2. अमेरिका और भारत के हितों में क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, मानवाधिकार स्वास्थ्य, ऊर्जा, व्यापार और निवेश के अवसरों के बारे में सकारात्मक कदम उठाने होगें।
3. हाल के वर्षों में भारत ने अपनी सैन्य सामग्री और तकनीकी प्राप्त करने में अमेरिका महत्वपूर्ण साझेदार बन गया है।
4. जलवायु परिवर्तन की चिंताओं और पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित मुद्दों पर भारत–अमेरिका ने अनुभव किया है, कि दोनों देशों को इस पर साथ आना होगा।
5. भारत व अमेरिका या सम्पूर्ण विश्व पर आतंकवाद का साया मंडरा रहा है इसलिए विश्व शांति के लिए दोनों देशों को साथ आना होगा।
6. समानता के स्तर पर भारत के परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्र का दर्जा देने व संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारतीय स्थायी सदस्यता का समर्थन करने से वास्तविक रूप में विश्वास बनेगा।

अतः भारत व अमेरिका हर क्षेत्र में रक्षा, सैन्य, आर्थिक, सूचना प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक, राजनैतिक संबंध स्थापित करने की ओर अग्रेसित है यद्यपि कुछ मुद्दों जैसे कि परमाणु अप्रसार संधि, सी.टी.बी.टी., कश्मीर, आतंकवाद पर मतभेद देखने को मिलता है, लेकिन इसके बावजूद दोनों देश आर्थिक, व्यापारिक, सैन्य आदि सहयोग को मतभेदपूर्ण मुद्दों से ऊपर रखकर लोकतांत्रिक मूल्यों व अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व्यवस्था स्थापित करने पर विश्वास जताते है। किसी भी देश का सर्वोच्च प्राथमिक हित इस बात में निहित है, कि वह अपनी भौगोलिक, राजनैतिक प्रभुसत्ता व स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखे। यह तभी संभव होगा जब भारत के पास एक सशक्त व सक्षम रक्षा प्रणाली व अर्थव्यवस्था होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *जे.एन. दीक्षित, ''भारत की विदेश नीति'', प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं. 79*
2. *चिंतामणी महापात्रा, ''पोखरण–द्वितीय एण्ड ऑफ्टर डार्क क्लाउड्स ओवर इण्डो–यू.एस. रिलेशंस'', स्ट्रेटेजिक ऐनेलिसस, वाल्यूम 22, अंक 10 जनवरी 1999, पृ. 1630*
3. *चौधरी, परमीत पाल, ''विल ट्रंप चेंज यू.एस. फॉरेन पॉलिसी'', हिन्दुस्तान टाइम्स, 13 नवम्बर, 2016.*
4. *शंकर ,कल्याणी , इण्डिया एण्ड द यूनाइटेड स्टेट्स, पोलिटिक्स ऑफ द सिक्लटीप, मैकमिलन पब्लिशर्स, इण्डिया, 2007*
5. *भारत की विदेश नीति– भाग–2, अंक 65, नवम्बर 2018, पृ.सं. 54*
6. *के.सी. सिंह, भारत–अमेरिका संबंध उभरती साझेदारियां योजना जुलाई 2015, पृ. 17*
7. *डॉ. कुमार, राजेष, 21वी सदी में भारत अमेरिका रक्षा तथा अंतरिक्ष सुरक्षा सहयोग, वर्ल्ड फोक्स, दिसम्बर 2015 पृ. 89*
8. *जैन, बी.एम., अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013 पृ. 117*
9. *युसुफ मोहम्मद, ब्रेकिंग पीसइनन्यक्लिमर इन्वायरमेंटः यू.एस. काइसिस मैनेजमेंट इनसाउथ एशिया, स्टेनफार्ड– यूनिवर्सिटी प्रेस, 2018 पृ 115*